एम० ए० हिन्दी I सेमेस्टर

प्रथम-पत्र

डा० अनिरुद्ध प्रसाद
हिन्दी विभाग
महाराजा कालेज, आरा
M: 9204396227

प्रश्न: हिन्दी भाषा की उत्पत्ति कैसे हुयी? इसके उद्भव पर प्रकाश डालें।

अथवा

हिन्दी भाषा के भाषिक संरचना पर ~~[illegible]~~ प्रकाश डालिए।

उत्तर: जिस हिन्दी शब्द का प्रयोग हम सामान्य या संवैधानिक अर्थ में क्रमशः राष्ट्रभाषा के रूप में करते हैं, वह भाषा के अर्थ में नया है। संस्कृत, प्राकृत तथा अपभ्रंश शब्द कहीं नहीं मिलता। मुसलमानों के शासन काल में सर्वप्रथम हिन्दी शब्द का प्रयोग भाषा के रूप में मिलता है।

प्रयोग तथा रूप के दृष्टि से हिन्दी शब्द, हिन्दी भाषा एवं खड़ीबोली का न होकर फारसी का ही है। डा० धीरेन्द्र वर्मा ने लिखा है कि 'स' ध्वनि का उच्चारण फारसी में 'ह' हो जाता है। इसी आधार पर कुछ विद्वान हिन्दी शब्द को सिन्धी का रूपांतरण मानते हैं। किंतु कुछ विद्वानों ने इस मत को भ्रामक माना है, ~~[illegible]~~ क्योंकि पूरे साहित्य में ~~[illegible]~~ 'सिन्धी' का शब्द का प्रयोग कहीं नहीं मिलता। उसमें सिन्धु, 'सैन्धव,' या 'सिंधावी' शब्द अवश्य मिलता है। वास्तविकता यह है कि इरान के प्राचीन ग्रंथों में हिन्दू और हिन्दी शब्दों के प्रयोग मिलते हैं। पारसियों के प्रसिद्ध ग्रंथ — 'दसतीर' (500 पूर्व की रचना) में एक ब्राह्मणी शास्त्रार्थ के पूर्व गर्वोक्ति से कहती है — अकनूँ बिरहमने व्यास नाम अज हिन्द। (मैं हिन्द देश में जन्मा हिन्दू हूँ।) सच्चाई यह है कि प्रारंभ से ही इरान में हिन्दू शब्द सिन्धु नदी के पार के देशों के लिए प्रचलित था। इसका प्रमाण यह है कि यूरोप का 'Ind' शब्द ~~[illegible]~~ हिन्दी से ही बना है। व्याकरण की दृष्टि से मूल फारसी शब्द ~~[illegible]~~ हिन्दी की उत्पत्ति (हिन्द + ई) संबंध सूचक निसबत का प्रत्यय, जोड़कर हुयी है। शुरू में इसका प्रयोग हिन्द के निवासी एवं हिन्द की भाषा इन दोनों अर्थों में होता था। कालांतर में हिन्दी प्रयोग देश मूलक न ~~होकर~~ रहकर भाषा के ~~[illegible]~~ अर्थ का साधक हो गया है। हिन्दी शब्द की प्राचीनता का एक एक प्रमाण यह भी है कि फारसी और अरबी में यह

P.T.O

Scanned with CamScanner

यह शब्द कुछ भारतीयों चीजों के नाम के रूप में काफी अर्से से प्रयुक्त होता आया है। यथा — फारसी तथा अरबी में 'हिन्दी' का प्रयोग विशेष प्रकार की भारतीय तलवार के लिए होता रहा है। अरबी में 'तमर' हिन्दी में इसका अर्थ है 'इमली'।

इस प्रकार हम देखते हैं कि भाषा के संदर्भ में हिन्दी शब्द अपेक्षाकृत नया है। किन्तु हिन्दी शब्द का प्रयोग मुसलमान बादशाहों द्वारा किया जाता रहा है। इसके पूर्व यहाँ 'भाषा' के लिए 'भाखा' शब्द भी प्रचलित रहा है। वस्तुतः मुसलमान बादशाहों ने भाषा के साथ क्रमशः 'हिन्दी' का भी प्रयोग किया। उनके विशेष सम्पर्क तथा ~~निवास~~ निवास तथा देश के मुख्य भाग - मध्य देश से रहा, इसलिए उन्होंने वहाँ की बोली के लिए 'जबाँने हिन्दी' अथवा 'हिन्दी' शब्द का इस्तेमाल किया।

हिन्दी के लिए हिन्दुई, हिन्दवी, रेख्ता, रेख्ती, दक्खिनी, गूजरी, खड़ीबोली, आर्यभाषा और राष्ट्रभाषा आदि नामों का प्रयोग होता रहा है। इनमें 'हिन्दवी' ~~सबसे~~ प्राचीन शब्द है। वह भी मुसलमानों द्वारा दिया गया है। व्याकरण की प्रक्रिया के अनुसार 'हिन्दुई' शब्द से हिन्दुओं की भाषा तथा 'हिन्दवी' शब्द से हिन्द की भाषा का ज्ञान होता है। 'हिन्दवी' का विकास शौरसेनी या अपभ्रंश से भी हुआ है। इसका प्रयोग मध्य-देश में सहज रूप से होता था। दिल्ली के आसपास विकसित होने वाली भाषा का नाम देहलवी पड़ा। हिन्दी की भाषा के अर्थ में 'हिन्दवी' शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम प्रयोग मुहम्मद गाउनोफी ने 13 वीं सदी में किया था। 13वीं सदी में अमीर खुसरो ने भी अपने ग्रंथ 'खालिकबारी' में इस शब्द का प्रयोग ~~हिन्दी हिन्दवी~~ अनेक स्थानों पर किया। कवि तुलसीदास ने भी अपने ग्रंथ 'पंचनामा' में इस शब्द का प्रयोग किया था। 'हिन्दवी' को उत्तर भारत के मुसलमानों ने जब फारसी के साँचे में ढाल दिया तब यही 'रेख्ता' कहलायी।

'हिन्दवी' का एक विशेष शैली गत भाषा के रूप के अर्थ में 'रेख्ता' का प्रयोग हुआ है। मूलतः यह फारसी का शब्द है – जिसका अर्थ है मिली-जुली। फारसी शब्दों के हिन्दी में मिलने पर यह संज्ञा मिली। 'रेख्ता' के साथ ही 'रेख्ती' का भी प्रयोग कहीं-कहीं देखने को मिलता है। 'रेख्ती' में विशेषतः उन्हीं मुहावरों, रूपों तथा प्रयोगों को स्थान दिया जाता है जो मुसलमान औरतों में प्रचलित थे। 'रेख्ता' भाषा शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग 1568 ई० के सादी-दक्खिनी ने किया था। उसके बाद मीर, सौदा, गालिब आदि कवियों ने अपनी काव्य-भाषा में 'रेख्ता' का नाम दिया।

14-15 शताब्दी में दिल्ली के आसपास विकसित खड़ी बोली जब उत्तर भारत के शासकों के साथ दक्षिण में गयी तब 'दक्खिनी' कहलायी उस पर दक्षिणी भारत की भाषाओं का भी प्रभाव पड़ा। दक्षिण के सभी कवि मुसलमान थे तथा उनकी लिपि फारसी थी। बहमनी राज्य, आदिलशाही तथा निजामशाही के संरक्षण में दक्खिनी में उच्चकोटि के साहित्य रचे गए। इसमें संस्कृत के तथा अरबी-फारसी के शब्दों का अत्याधिक प्रयोग देखने को मिलता है। यही कारण है कि आगे चलकर उत्तर-भारत में इसका विकास होने पर उर्दू कहलायी। दिल्ली के बाद जब यह गुजरात गयी तब गुजरी कहलायी।

उर्दू के बाद 'हिन्दी' के लिए 'हिन्दुस्तानी' शब्द का खूब प्रचार हुआ। यह शब्द मूलतः विशेषण है। अधिकांश विद्वानों का मत है कि यह हमारी भाषा के लिए यूरोपियन विद्वानों द्वारा

Scanned with CamScanner

17वीं सदी में दिया गया शब्द है। किंतु इससे पहले 16वीं सदी में इस शब्द का जन्म हो चुका था। 1715 ई० में डच्च पादरी जे० केटलीर द्वारा लिखित हिन्दी व्याकरण तथा सन् 1800 ई० में जॉन-गिलक्राइस्ट ने इस शब्द का प्रयोग किया 18वीं सदी में हिन्दी-उर्दू मिश्रित रूप को हिन्दुस्तानी कहा गया। गाँधी जी ने हिन्दुस्तानी शब्द को महत्व दिया। इसके बाद 'हिन्दुस्तानी' शब्द का का प्रचलन 'हिन्दुस्तानी' को उर्दू से अलग करने के कारण हिन्दी के रूप में प्रतिष्ठित हुआ।

हिन्दी भाषा खड़ीबोली का नाम ब्रज अवधी तथा राजस्थानी की अपेक्षा नयी है। भारतीय संविधान द्वारा खड़ीबोली को ही राजभाषा के रूप में मान्यता मिली। एक अन्य शब्द - (आर्यभाषा / 19वीं सदी में आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती के द्वारा हो चुका था। ('देवनागरी' तथा 'नागरी' शब्द का प्रयोग भी हिन्दी भाषा के लिए ही किया जाता है। फारसी लिपी से अलग बोध होने के लिए ही शायद ऐसा किया गया हो। पंजाब नागरी लिपि में लिखी जाने वाली भाषा को 'शास्त्री' अथवा 'शास्त्रीक' भाषा भी कहा जाता है। इस तरह विशुद्ध खड़ी बोली, ठेठ हिन्दी ग्रामीण हिन्दी तथा फारसी भाषा से पूर्णतः अलग तत्सम शब्दों के आधिक्य के कारण इसे शुद्ध शुद्ध हिन्दी तथा उच्च हिन्दी भी कहा जाता है।

Scanned with CamScanner